खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासी श्रमिकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का एक समीक्षात्मक अध्ययन (2014 से वर्तमान तक)

राजनीति विज्ञान में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकत्री
ईशा

शोध निर्देशिका
डॉ. रचना यादव

समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा - 282 005

2024

प्रस्तावना-

भारतीय प्रवासी सम्पूर्ण विश्व में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्क्रतिक जुड़ाव को बढ़ाते हैं जैसे- विभिन्न भाषाओं का उपयोग, विभिन्न संस्कृतियों के नियमों का पालन और विभिन्न देशों में अपने श्रम एवं कौशल का विकास करते हैं| वर्तमान में भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में लगभग 20 मिलियन हैं जो सम्पूर्ण विश्व में भारत के नैतिक मूल्य, आर्थिक क्रियाओं व वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को दर्शाते है(www.mea.gov.in,2023)| भारतीय प्रवासी भारत की नरम कूटनीति को सफल बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| ग्लोबल माइग्रेशन रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारतीय प्रवासियों ने सबसे अधिक संख्या में खाड़ी क्षेत्र में प्रवास किया है जो की प्रवासन की सबसे बड़ी संख्या रही हैं| 2020 में भारतीय संसद की रिपोर्ट के ऑकड़ो से स्पष्ट है कि भारतीय प्रवासी भौगोलिक रूप से खाड़ी देश (यु.ए.ई. एवं कुवैत) में व्यापक रूप से फैले हुये है| 2022 जीएमआर रिपोर्ट में चीन, मैक्सिको, रूस व भारत चार देश प्रवास करने में शीर्ष पर रहे हैं (www.mea.gov.in,2023)|

तालिका 1. खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों की संख्या वर्ष 2022 में

खाड़ी देश के नाम	**भारतीय प्रवासियों की संख्या (2022)** आंकडें मिलियन में है
बुनेई	308662
कुवैत	924687
ओमान	653500
कतर	844499
सऊदी अरब	2465464
संयुक्त अरब अमीरात	3554274
कुल	**8751086**

(स्रोत- https://www.mea.gov.in/lok-sabha.htm?dtl/3597)

उपरोक्त अंकड़ों से स्प्ष्ट है कि भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में लगभग 10 मिलियन हैं यह आंकडें 2022 के जीएमआर रिपोर्ट के अनुसार है जिसमें बुनेई में भारतीय प्रवासी 308662, कुवैत में 924687, ओमान में 653500, क़तर में 844499, सऊदी अरब 2465464 और यू.ए.ई. में 3554274 अर्थात् कुल 8751086 भारतीय प्रवासियों कि प्रवासन संख्या 2022 में रही है|

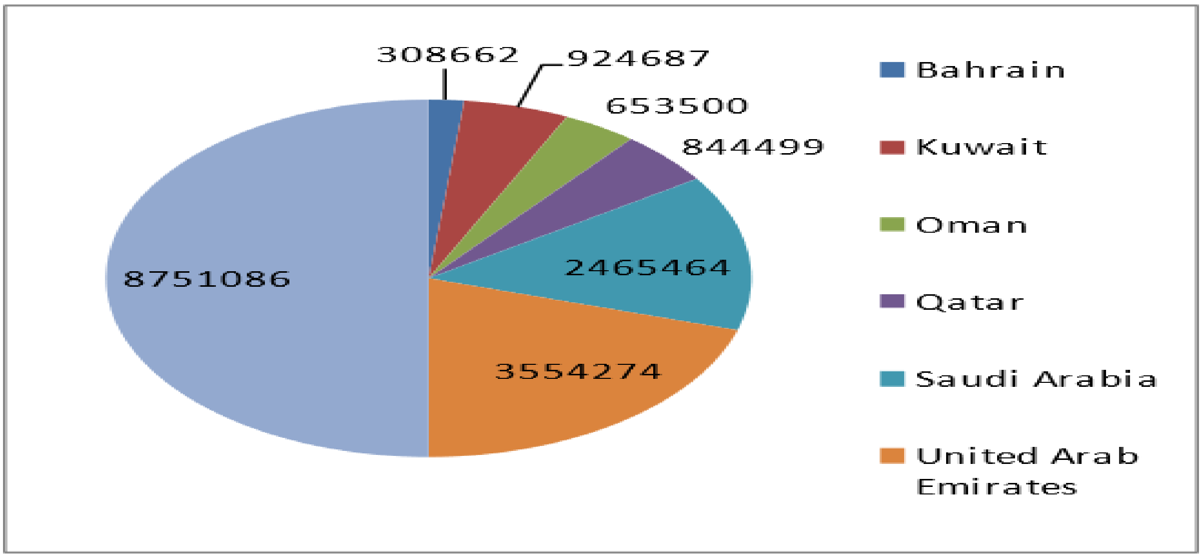

चार्ट 1. खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों की संख्या

(स्रोत- https://www.mea.gov.in/lok-sabha.htm?dtl/3597)

तालिका 2. खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों की संख्या वर्ष 2023 में

खाड़ी देश के नाम	**भारतीय प्रवासियों की संख्या (2023)** आंकडें मिलियन में है
ब्रुनेई	326658
कुवैत	1029861
ओमान	781141
कतर	746550
सऊदी अरब	2594947
संयुक्त अरब अमीरात	3425144
कुल	8904301

(स्रोत- https://www.mea.gov.in/population-of-overseas-indians.htm)

उपरोक्त अंकड़ों से स्पष्ट है कि भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में लगभग 10 मिलियन हैं यह आंकडें 2023 के जीएमआर रिपोर्ट के अनुसार है जिसमें ब्रुनेई में भारतीय प्रवासी 326658, कुवैत में 1029861, ओमान में 781141, क़तर में 746550, सऊदी अरब 2594947 और यू.ए.ई. में 3425144 अर्थात् कुल 8904301 भारतीय प्रवासियों कि प्रवासन संख्या 2023 में रही है|

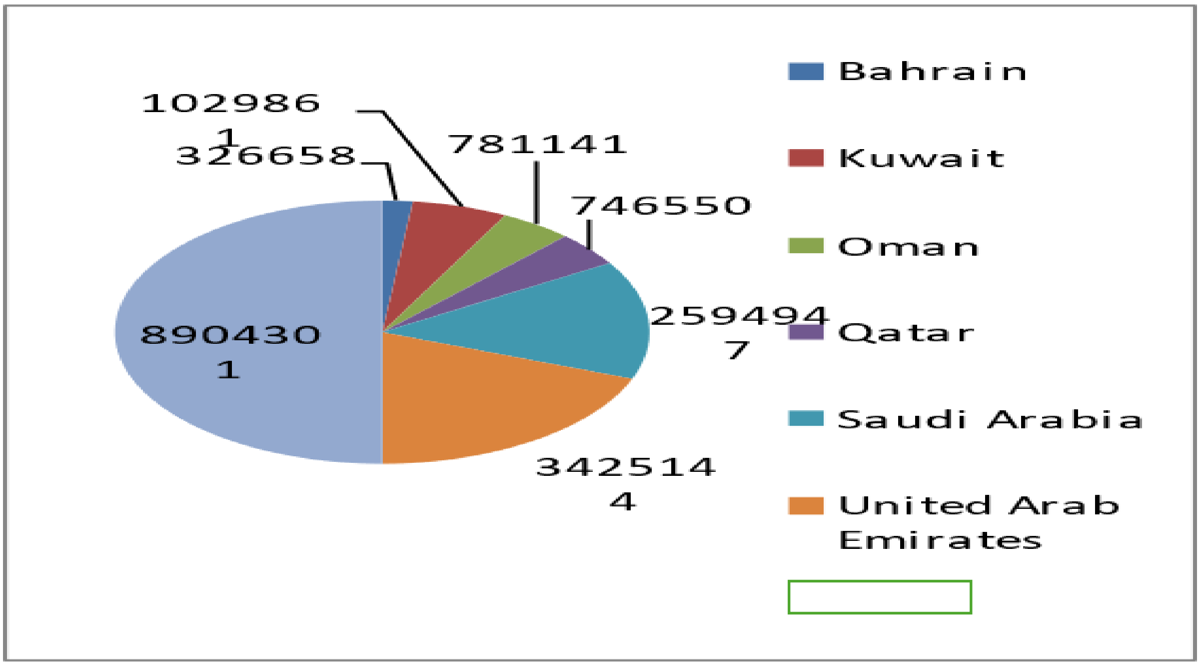

चार्ट 2. खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों की संख्या

(स्रोत- https://www.mea.gov.in/population-of-overseas-indians.htm)

भारतीय प्रवासी श्रमिकों का कार्य के अनुसार विभाजन किया गया है| भारतीय प्रवासियों कि खाड़ी क्षेत्र में प्रवासन कि निम्न श्रेणियां हैं-

1. व्यवसाय के लिए प्रवासन
2. शिक्षा, डॉक्टर, नर्स, इंजीनियर पेशेवरों के लिए प्रवासन
3. तकनीकी कार्यों के लिए प्रवासन
4. अर्ध-कुशल एवं अकुशल श्रम के लिए प्रवासन (निर्माण कार्य, घरेलू नौकर, ड्राइवर, परिवहन सेवा)

खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासी कुशल श्रमिक 30% हैं जिसमें डॉक्टर, नर्स, इंजिनियर, प्रबधन सलाहकार, शिक्षक, मिडिया और स्वास्थ्य पेशेवर शम्मिलित हैं| खाड़ी क्षेत्र में अकुशल व अर्ध-कुशल भारतीय प्रवासी 70% हैं जिसमें घरेलू नौकर, ड्राइवर, निर्माण श्रमिक, विधार्थी, बच्चें व बुजुर्ग शामिल हैं|

भारतीय प्रवासी विश्व में वैश्वीकरण व व्यापारिकता के कारण प्रवास करने में रूचि लेने लगे हैं| भारतीय प्रवासियों की अधिक रुचि खाड़ी देशों की ओर है जिसका कारण है खाड़ी क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर प्राप्त होना है क्योंकि

खाड़ी क्षेत्र में कुशल व अकुशल दोनों ही प्रकार के श्रमिकों को रोजगार मिलता है इसीलिए भारतीय श्रमिकों का सर्वाधिक पसंदीदा स्थल खाड़ी क्षेत्र रहा है| **नायडू** ने अपने शोधपत्र “Indian Migration in Gulf Countries” में बताया है कि भारतीय प्रवासियों का खाड़ी क्षेत्र में पलायन करने में विशेष रूचि इसलिए रखते हैं क्योंकि भारतीय श्रमिकों को खाड़ी क्षेत्र में योग्य, कुशल, अकुशल एवं अर्ध-कुशल श्रमिकों को अच्छे रोजगार मिल जाते है(Naidu,1991)| भारतीय प्रवासी विश्व के सबसे बड़े प्रवासी भारतीयों में से एक है, जिसकी उपस्थिति कई देशों व महाद्वीपों में है| प्राचीनकाल से ही विदेशों में भारतीयों के प्रवास करने की प्रक्रिया चली आ रही है| भारतीय प्रवासियों के लिए पलायन करने का सबसे पसंदीदा क्षेत्र खाड़ी क्षेत्र रहा है जहाँ पर भारतीय प्रवासियों को रोजगार मिलता है| भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| भारत ने प्राचीन समय से खाड़ी देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सम्बंध विकसित किये हैं|

चित्र 1.

खाड़ी देशों का मानचित्र

(स्रोत- https://www.britannica.com/topic/Gulf-Cooperation-Council)

खाड़ी देशों में बहरीन, कुबैत, ओमान, क़तर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात है| भारत व खाड़ी देशों के सम्बंध खाड़ी क्षेत्र में वाणिज्य एवं व्यापार की प्रकिया से प्रारंभ हुये हैं यह सम्बंध प्राचीन काल में सिल्क मार्ग से व्यापार करने के साथ विकसित हुये है | खाड़ी देशों के साथ भारत का जुड़ाव प्रवासी समुदाय के खाड़ी क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण अधिक बढ गया है| खाड़ी देश भारत के लिए आर्थिक वृद्दि, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, पेट्रोलियम व

राजनीतिक योगदान के कारण महत्वपूर्ण हैं| खाड़ी देश भारत के एक अच्छे मित्र राष्ट्रों में से एक है| भारत के साथ खाड़ी देशों के सम्बंध बहुआयामी है| भारतीय प्रवासियों के खाड़ी क्षेत्रों में रहने से भारत का खाड़ी देशों से जुड़ाव विकसित हुआ है, जिसके कारण भारतीय प्रवासी खाड़ी देशों के प्रति भारत की नरम विदेशनीति का प्रतिनिधित्व करते है| भारत की खाड़ी देशों के प्रति नरम विदेशनीति व उदारवादी विदेशनीति है जिसका कारण भारतीय प्रवासी है, यह भारत व खाड़ी क्षेत्र के द्विपक्षीय सम्बन्धो का भी निर्वाह करते है|

भारतीय प्रवासी भी प्राचीन समय में व्यापार एवं वाणिज्यिक क्रियाओं के साथ-साथ खाड़ी क्षेत्र में निवास करने के लिए भारत से खाड़ी क्षेत्र के लिए पलायन कर गये थे| खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति तीसरी शताब्दी से सिल्क मार्ग से शुरू हुई, भारत से पलायन औपनिवेशिक काल में भी निरंतर चलता रहा है व स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह क्रम बढता गया है| खाड़ी सहयोग परिषद् की स्थापना 25 मई 1981 को रियाद, सऊदी अरब में की गयी, जिसका उद्देश्य तेल एवं पेट्रोलियम खरीदने वाले देशों के साथ मिलकर कार्य करे और खाड़ी सहयोग परिषद् के देशों की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने का प्रयास करना है(www.eoiriyadh.gov.in, 2023)| खाड़ी सहयोग परिषद् एक समूह के रूप में अपने सदस्य राज्यों की अर्थव्यवस्था, राजनीतिक और सुरक्षा नीतियों का निर्धारण करता है| भारत व खाड़ी देश मिलकर एक दुसरे के सहयोगियों की तरह कार्य करते हैं| अगर भौगोलिक स्थिति को देखा जाये तो खाड़ी देशों की स्थिति भारत के पडोसी राज्यों के आस-पास की ही है जो केवल अरब सागर के बीच में होने के कारण एक दूसरे को अलग करते हैं| खाड़ी देश में सामूहिक रूप से एक बड़े पैमाने पर भारतीय प्रवासी समुदाय निवास करता है जिससे भारत व खाड़ी क्षेत्र में सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक जुड़ाव बना हुआ है| भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में अपने सांस्कृतिक जुड़ाव को बढ़ाने का कार्य करते हैं| इसके साथ ही आर्थिक क्षेत्र में अपनी भागीदारी निभाते हैं| भारत व खाड़ी देशों के मध्य क्षेत्रीय व्यापार व आर्थिक क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाया जा रहा है और इसके साथ ही भारत व खाड़ी देशों के मध्य व्यापारिक संबंधो का प्रारंभ हुआ है| जिसका प्रभाव यह देखा जा सकता है कि भारत के लोग खाड़ी देशों

की ओर पलायन करने में रूचि लेने लगे हैं इससे खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासियों को अपने सांस्क्रतिक व आर्थिक जुड़ाव को बढाने में सहायता मिलती है|

भारतीय प्रवासियों का एक पहलू यह भी है कि भारतीय प्रवासियों को खाड़ी क्षेत्र में अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है जिसका प्रभाव भारत व खाड़ी देशों के सम्बंधो पर भी पड़ सकता है| वर्तमान में भारतीय प्रवासिओं की समस्याओं को दूर करने के लिए भारत सरकार द्वारा भारतीय प्रवासियों के लिए सक्रिय रूप से कोई भी कदम नहीं उठाया गया है जिससे कि भारतीय प्रवासियों को खाड़ी क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है उनकी इस समस्याओं की ओर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि भारतीय एवं खाड़ी क्षेत्र एक सहयोगी राष्ट्रों के रूप में विश्व राजनीति पर अपना प्रभाव डालते हैं,उनकी इस स्थिति को कायम रखने के लिए हमें भारतीय प्रवासियों की समस्याओं की ओर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यदि हमें दोनों ही राष्ट्रों की विश्व पटल पर मित्रराष्ट्रों की स्थिति को बनाये रखना है तो हमें इन प्रवासियों की स्थिति पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि प्रवासियों की समस्याएं दोनों ही मित्र राष्ट्रों के सम्बंधों को बनाये रखने में बाधा उत्पन्न कर रहें हैं| वर्तमान में भारतीय प्रवासिओं की खाड़ी क्षेत्र की स्थिति पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह प्रवासी भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य सम्बंधों को बनाये रखने में विशेष भूमिका निभाते हैं|

अवधारणाओं का स्पष्टीकरण-

❖ **प्रवासी**

प्रवासी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द “डायस्पोरा” डायस्पेरियन से हुई है- जिसका अर्थ है “फैलाव”| प्रवासी शब्द का अर्थ है- किसी भौगोलिक क्षेत्र के मूल वासियों का किसी अन्य भौगोलिक क्षेत्र में प्रवास करना है|

❖ **खाड़ी सहयोग परिषद् (1981)**

खाड़ी सहयोग परिषद् (जीसीसी) एक क्षेत्रीय संगठन है जिसमें 6 अरब राज्य शामिल है: बहरीन, कुबैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात है| जीसीसी दुनिया की सबसे तेजी से बढती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है जिसका मुख्य कारण तेल और प्राकृतिक गैस के बढते निवेश और कीमतों का बढना है|

चित्र 2. खाड़ी सहयोगी देश व खाड़ी सहयोग का चिन्ह

(स्त्रोत-https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/what-is-gulf-corporation-council-gcc-solidarity-and-stability-deal-1610093489-1)

जीसीसी के उद्देश्य-

1- सदस्य देशों के बीच एकता प्राप्त करने के लिए सभी क्षेत्रों में समन्वय, एकीकरण और अंर्तसंबंध को प्रभावित करना|

2- विभिन्न क्षेत्रों में अपने लोगों के बीच मौजूदा सम्बंधों, संपर्कों और सहयोग के क्षेत्रों को गहरा और मजबूत करना|

3- विभिन्न क्षेत्रों में समान नियम तैयार करना:

- आर्थिक एवं वित्तीय मामले|
- वाणिज्य, सीमा शुल्क और संचार|
- शिक्षा एंव संस्कृति|
- सामाजिक एवं स्वास्थ्य मामले|
- सूचना एवं पर्यटन|
- विधायी और प्रशासनिक मामले|

4- उधोग, खनन, कृषि, जल और पशु संसाधनों के क्षेत्र में वैज्ञानिक और तकनीकि प्रगति को प्रोत्साहित करना; वैज्ञानिक अनुसंधान स्थापित करना; संयुक्त उधम स्थापित करना और अपने नागरिकों की भलाई के लिए निजी

क्षेत्र द्वारा सहयोग को प्रोत्साहित करना|

खाड़ी देश में भारतीय प्रवासियों के कारण भारतीय जुड़ाव को बढावा मिला है जैसे सांस्कृतिक फैलाव, सामाजिक जुड़ाव इत्यादि| भारत एवं खाड़ी देश में भारतीय प्रवासियों के कारण नरम कूटनीतिक सम्बंधो को अपनाये हुये है इससे भारत के कई उद्देश्यों की पूर्ति की गई है जैसे भारत की खाड़ी देशों के साथ क्षेत्रीय साझेदारी, आर्थिक व राजनीतिक शक्ति के केंद्र के रूप में उभरी है|

भारत की खाड़ी देशों के प्रति विदेशनीति

भारत की खाड़ी देशों के प्रति विदेशनीति द्विपक्षीय सम्बंधो पर आधरित है जिसका आधार भारतीय नरम विदेशनीति है यदि वर्तमान भारतीय विदेशनीति को देखा जाये तो भारत की विदेशनीति खाड़ी देशों की तरफ सहयोगी एवं मैत्रीपूर्ण सम्बंधो पर आधारित है जिसका कि सर्वोपरि उदाहरण भारतीय प्रवासियों की खाड़ी देशों में दिन प्रतिदिन हो रही संख्या में वृध्दि से है| इस आधार पर यह कहना उचित होगा कि भारत और खाड़ी देशों के मध्य सम्बंध सहयोग पूर्ण है| भारतीय विदेशनीति मुख्यतः दो सिद्धन्तो पर आधारित है यथार्थवाद एवं उदारवाद, इन्ही का परिणाम नरम भारतीय विदेशनीति है|

खाड़ी देशों की भारत के प्रति विदेशनीति

भारत के प्रति खाड़ी देशों की विदेशनीति बहुआयामी है, जिसमें सांस्कृतिक और राजनीतिक जुड़ावों के साथ-साथ शक्ति, सुरक्षा प्रवासी, जुड़ाव और अर्थशास्त्र के व्यावहारिक विचार शामिल है| खाड़ी देशों की विदेशनीति मुख्यतः यथार्थवाद, नवयथार्थवाद एवं संरचनावाद पर आधारित है| भारत के प्रति खाड़ी देशों की सुरक्षा राजनीतिक दृष्टिकोण से यथार्थवाद उपागम की विशेषताओं को अपनाते हुये है साथ ही साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खाड़ी देश भारत के प्रति संरचनावादी अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत को भी अपनी विदेशनीति का आधार बनाये हुये है|

भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य सम्बंधों का इतिहास

भारत और खाड़ी देशों के मध्य सम्बंध ‘सिल्क मार्ग’ जितने पुराने हैं, उस समय यदि दोनों देशों के सम्बंधो पर नजर

डाली जाये तो यह सम्बंध व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर केन्द्रित थे| दोनों देशों के मध्य सम्बंध समय के साथ और विकसित होते जा रहे हैं| औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय श्रमिकों को बधुआ मजदूर बनाकर खाड़ी क्षेत्रों में ले जाया गया जिससे प्रवासन का क्रम चलता रहा| स्वतंत्रता के बाद 1947 से 1986 तक भारत ने मध्य पूर्व के लिए एक वैचारिक नीति को अपनाया| जीसीसी के लिए भारत की नरम विदेशनीति रही जिसका कारण सांस्कृतिक जुड़ाव है जो दशकों पहले से ही है और पिछले कुछ सालों से इसमें काफी विकास हुआ है| भारत के खाड़ी देशों के साथ ऐतिहासिक सम्बंध व्यापार और सांस्कृतिक क्षेत्र में विकसित हुये हैं| ये सम्बंध तेल, ऊर्जा और श्रम के आधार पर द्विपक्षीय आधार पर भी विकसित हो रहे हैं| भारत सरकार ने अपने प्रवासी समुदाय को ध्यान में रखते हुये और अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए खाड़ी देशों के साथ नरम कूटनीति को अपनाया हुआ है| खाड़ी देशों में भारत की रणनीतिक हिस्सेदारी बढ रहीं है जोकि प्रवासी समुदाय के भारत और खाड़ी देशों के मध्य सांस्कृतिक जुड़ाव और आर्थिक लाभ के बढने के कारण हुआ है|

भारतीय प्रवासियों का खाड़ी देशों की ओर पलायन कारण के कारण-

भारतीय प्रवासी समुदाय सम्पूर्ण विश्व में खाड़ी क्षेत्र में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है जिसके निम्नलिखित कारण है-

- भारतीय प्रवासी जो अकुशल और अर्ध-कुशल श्रमिक है उनको खाड़ी क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर मिल जाते हैं|
- खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासी श्रमिक जो अपने देश में ड्राइवर, घरेलू नौकर, झाड़ू लगाना, इत्यादि निम्न श्रेणी के कार्यों को करने में शरमाते है किन्तु इन्ही कार्यों को खाड़ी क्षेत्र में बहुत अच्छे से कर रहे हैं|
- भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र को अपना पसंदीदा प्रवासन क्षेत्र धार्मिक कारण चुनते है ताकि वह रोजगार के साथ-साथ धार्मिक क्रियायों को भी आसानी से कर सकें जैसे- मुस्लिम एवं पारसी समुदाय के लोग|

समस्या कथन-

खाड़ी देशों के साथ भारत के सम्बंध व्यापारिक एवं राजनीतिक स्तर पर आधारित है| भारत एवं खाड़ी देश के मध्य सम्बंध नरम विदेशनीति का परिणाम है| यह सम्बंध बहुत अधिक प्राचीन है| भारतीय प्रवासियों की अधिक रूचि खाड़ी देशों की ओर है जिसका कारण है खाड़ी देशों में रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त होना, परन्तु इन भारतीय प्रवासियों को खाड़ी देशों में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जैसे सुरक्षा, वेतन में देरी, कार्यस्थल पर शोषण, पासपोर्ट रोकना, रहने के लिए पर्याप्त जगह न होना इत्यादि समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है| यह समस्या केवल भारतीय प्रवासियों तक ही सीमित नहीं है अपितु भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य संबंधो पर भी अपना प्रभाव डाल रही है| इसी समस्या को अपना मुख्य आधार बनाते हुये शोधकर्ता द्वारा अपने शोध का विषय **"खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासी श्रमिकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का एक समीक्षात्मक अध्ययन (2014 से वर्तमान तक)"** का चुनाव किया गया है| भारत व खाड़ी देशों के मध्य द्विपक्षीय सम्बंधो को मजबूत करने में भारतीय प्रवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है यह न केवल दोनों के मध्य आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक जुड़ाव को दर्शाते हैं| विश्व पटल पर दोनों देश अपनी राजनीतिक एवं व्यापारिक साझेदारी को भी निभाते है इसलिए भारत एवं खाड़ी देशों के द्वारा इन प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को नजरअंदाज नहीं करना चाहिये जैसे भारत ने अपने देश में रह रहे श्रमिकों के लिए श्रमनीति का निर्माण किया वैसे ही भारत द्वारा अपने भारतीय प्रवासियों जो कि खाड़ी देशों में रह रहें है उनके लिए सहभागिता नीति का भी निर्माण करना चाहिये| खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासियों के परिदृश्य को देखा जाये तो भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में अस्थायी निवासी के रूप में निवास करते है, जिनका उद्देश्य अपना आर्थिक विकास करना है लेकिन भारत सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और न ही प्रवासी नीति को सक्रिय रूप से क्रियान्वित किया इस शोध के माध्यम से सरकार के नीति निर्माताओं का ध्यान इस ओर खीचने का प्रयास किया जायेगा ताकि प्रवासी श्रमिकों के लिये अच्छी नीतियों का निर्माण किया जा सके और भविष्य के भावी श्रमिकों की समस्याओं का समाधान किया जा सकें और उनके लिए अनेक संसाधनों को भी उपलब्ध कराया जा सके|

उद्देश्य-

1- भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य सम्बंधो की ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि का अध्ययन करना|

2- खाड़ी देशों के प्रति वर्तमान भारतीय विदेशनीति का अध्ययन करना|

3- खाड़ी देशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चुनौतियों का अवलोकन करना|

4- भारत सरकार द्वारा भारतीय प्रवासियों के लिए बनाई गई विभिन्न नीतियों एवं योजनाओं के प्रभावों का अध्ययन करना|

5- वर्तमान में खाड़ी देशों द्वारा भारतीय प्रवासियों को प्रदान की जा रही सुविधाओं व योजनाओं का अध्ययन करना|

साहित्य का पुनरावलोकन-

Myron, (1982) "International Migration and Development: Indians in the Persian Gulf" इस शोधपत्र में शोधकर्ता कहते हैं कि फारस की खाड़ी में स्थित तेल उत्पादक राज्यों में दो तिहाई श्रम शक्ति आयाम की जाती है जो कि दुनिया में सबसे अधिक श्रम आयाम अनुपात है| प्रस्तुत शोधपत्र यह सुझाव देता है कि विश्लेषण राज्य की नीति निर्धारण प्रक्रियाओं से शुरू होता है| विशेष रूप यह घरेलु निर्धारण अध्ययनों और अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक सार्वजनिक नीति के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की भूमिका को अनुभवजन्य रूप से तय करने का अवसर देता है जिससे घरेलू नीति प्रतिभागियों के रूप में प्रस्तुत करते है| इस शोधपत्र का उद्देश्य है अब तक की प्रगति का आकलन करना और ऐसे तरीके सुझाना जिनसे विद्वान वर्तमान अवधारणा का निर्माण कर सकें| शोधार्थी के प्रति इतिहासकारों और राजनीतिक विश्लेषकों को प्रवास-विदेशनीति से जोड़ने में कोई कठिनाई नहीं है|

Christopher, (1989) "International Migration, International Relations and Foreign Policy" प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी ने अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों और विदेशनीति पर अधिक ध्यान देते हुये बताया है कि वैश्विक प्रणाली प्रतिमानों के अनुप्रयोगों व प्रवासन पर घरेलू नीति निर्धारण प्रक्रियायों में जन-आंदोलनों की भी भूमिका है| इस शोधपत्र का उद्देश्य प्रवास के अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों के मध्यम क्षेणी के सामान्यीकरण का अध्ययन करना है| इसके साथ ही लेखक यह सुझाव

भी देते है कि विश्लेषण राज्य की नीति निर्धारण प्रक्रियाओं से शुरू होता है | विशेष रूप से घरेलु नीति निर्धरण अध्ययनों और अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक सार्वजानिक नीति के क्षेत्र से उपलब्ध तुलनात्मक दृष्टिकोण कर उपयोग से अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक ताकतों की राजनीतिक भूमिकाओं को अनुभवजन्य रूप से तय करने का भी अवसर प्रदान करता है| शोधपत्र में राज्य पर राज्य सम्बंधों के अध्ययन ममें आशाजनक भविष्य की दिशाका भी मूल्याकंन किया जाता है ताकि विश्व प्रवास राजनीतिके क्षेत्रीय या अन्य मध्यवर्ती क्षेत्रीय या अन्य मध्यवर्ती पैटर्न की पुष्टि करने से अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अधिक सिद्दान्तों में योगदान हो सकता है|

Naidu, (1991) ने अपने शोधपत्र “Indian Labour Migration to Gulf Countries” में लेखक का मानना है कि भारतीय श्रमिक प्रवासी खाड़ी क्षेत्रों की ओर पलायन करने में अधिक रूचि रखते हैं क्योंकि खाड़ी क्षेत्र में उच्च, योग्य व कुशल और अर्ध-कुशल श्रमिकों की बहुत मांग है जिससे श्रमिकों को रोजगार के व्यापक अवसर प्राप्त होते है| भारतीय प्रवासियों का खाड़ी क्षेत्र में अधिक पलायन का एक कारण लेखक ने यह भी बताया है कि खाड़ी क्षेत्र में सकल घरेलु उत्पाद में गैर-तेल क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढानें से परिवहन और संचार के श्रम के लिए घरेलु श्रमिकों की कमी होने के कारण यहाँ पर अर्ध-कुशल श्रमिकों को रोजगार के अवसर मिले व सुविधायें भी दी गई| भारत के पास सभी प्रकार के श्रमिकों का भंडार है जिसके कारण 1970-80 के दशक में भारतीय श्रमिकों की संख्या खाड़ी क्षेत्र में यह संख्या और अधिक बढती गई| 1981-87 में श्रमिकों के प्रवास का आँकड़ा 2,20,2000 हो गया जिसमें कुशल श्रमिक 50%, अर्ध कुशल श्रमिक 40%, उच्च कुशल श्रमिक 5% व 5% अन्य पर्यवेक्षी, सफेद्पोशक प्रवासी थे| लेखक के शोधपत्र का उद्देश्य है कि प्रवासी श्रमिक उच्च कौशल श्रमिकों की तुलना में अर्ध कुशल व अकुशल श्रमिकों का पलायन बढाने का अनुमान है| नायडू के अनुसार पूर्व विकसित देशों में यमन अरब गणराज्य में आयातित श्रम में भारत की हिस्सेदारी कम है जिसे जनशक्ति निर्यात को बढावा देने की आवश्यकता है| भारत को एशियाई देशों में प्रतिस्पर्धा करनी है ताकि भारत की भविष्य की सफलता जनशक्ति को प्रोत्साहन मिले व नीतियों का निर्माण भी करेगी|

Thomas, K. (2003) ने अपने शोधपत्र “Indian Migration to West Asia: Trend and Consequenes” में मुख्य रूप

से केरल से आ रहे भारतीय प्रवासियों की फारस की खाड़ी क्षेत्रों में पलायन करने के प्रति रुझान व इसके परिणामों का अध्ययन करना है यही लेखक के शोध का उद्देश्य है की खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों के पलायन का कारण है श्रमिकों का प्रवास करने कारणों का अध्ययन करना| लेखक का मानना है कि भारतीय प्रवास खाड़ी क्षेत्र में औपनिवेशिक काल से प्रारंभ हुआ, जिसका कारण ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा भारतीयों को बंधुआ मजदूर बनके ले जाना| 1920 के बाद से रोजगार के लिए पलायन बढ़ा| लेखक का मत है कि स्वतंत्रता के बाद भारतीयों का प्रवास का कारण रोजगार के लिए होने लगा| फारस की खाड़ी में भारत के केरल के लोगों का प्रवास का कारण सापेक्षिक आर्थिक पिछड़ापन था,साक्षरता, शिक्षा में वृधि, वेरोजगारी की समस्या व फारस की खाड़ी में रोजगार के अवसरों को खोजने में रूचि बढाने से पलायन में वृधि होने लगी| भारतीय प्रवासी के प्रवास करने के मजदूरों ने पूर्ण किया| लेखक ने अनुभव किया कि प्रवासन से व उसके प्रेषण से नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है हालाँकि प्रवासन मेंग्ये लोगों को धार्मिक लाभ भी हुआ है और कुछ लोगों को इससे हानि हुई है|

Thiollet, (2011) ने अपने शोधपत्र “Migration as Diplomacy: Labor Migrants, Refugees and Arab Regional Politics in the Oil-Rich Countries” में लेखक ने खाड़ी देशों की ओर प्रवास करने वाले प्रवासी श्रमिकों व शरणाथिओं के खाड़ी क्षेत्र की ओर पलायन करने के कारण को दर्शाया है| लेखक ने खाड़ी क्षेत्र (अरब) की ओर जाने वाले प्रवासियों के प्रवास का मुख्य कारण आर्थिक लाभ व आर्थिक हितों की पूर्ति करने को बताया है| प्रस्तुत लेख में लेखक के शोध का मुख्य उद्देश्य- प्रवासी व शरणार्थीओं दोनों ही अपने देशों का प्रतिनिधित्व का अध्ययन करना, प्रवासियों और शरणार्थीओं की खाड़ी क्षेत्रों में भूमिका का अध्ययन करना है| प्रस्तुत लेख से स्पष्ट होता है की शरणार्थी व प्रवासी अरब क्षेत्र में अपनी विशेष भूमिका को निभाते है श्रम प्रवास, शरणार्थी आन्दोलनों और क्षेत्रीय राजनीति को खाड़ी देशों व सम्बंधित देशों को एकीकृत करने की विशेष भूमिका निभाते है| खाड़ी देशों के साथ अच्छे सम्बंधों को बनाने के लिए “प्रवास कूटनीति” को प्रवासी समुदाय बढावा देने का कार्य करता है| लेखक ने अंत में तर्क दिया है कि प्रवासन के माध्यम से देखने पर

क्षेत्रीय एकीकरण की राजनीति को बेहतर ढंग से समझ जा सकता है|

Louise, (2013) ने अपने शोधपत्र “Global Arab World Migrations and Diasporas” में वर्तमान अरब विश्व प्रवास और प्रवासी लोगों की मात्रात्मकता व गुणात्मकता का अवलोकन किया है| मात्रात्मक प्रवासी वह प्रवासी है जो व्यक्ति अपने सामान्य निवास के लिए देश बदलता है व गुणात्मक प्रवासी वह है जिसमें व्यापार, तकनीकी रोजगार व छात्रों का पलायन करना है| लेखक का उद्देश्य है की एक व्यापक रुपरेखा विकसित करना जिससे कि एक स्थान, समय और सामाजिक सन्दर्भ में प्रवासियों की तुलना की जा सकें| लेखक इस शोध के माध्यम से अरब विश्व प्रवासी लोगों के मात्रात्मक आयामों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करते हुये प्रवासियों के मात्रात्मक और गुणात्मक महत्त्व को दर्शाते है| इसके साथ लेखक का यह दृष्टिकोण रहा है कि अरब क्षेत्र के प्रवासी जो यूरोप में हैं भारतीय प्रवासी व भारतीय विद्वानों से शोधकर्ता बातचीत नहीं करते और न ही उन्हें अध्ययन का हिस्सा बनाते है लेकिन इस ओर ध्यान देना चाहिये क्योंकि यूरोप के प्रवासी भी शोध का ही हिस्सा है| प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक, मात्रात्मक व वर्णात्मक शोधपदृति का प्रयोग किया गया है|

Azhar, (2016) “Indian migrant workers in GCC Countries” अजहर कहते है कि भारत और खाड़ी देशों के बीच सम्बंध व्यपारिक गतिविधियों के साथ प्रारंभ हुए जो आज तक भी सुचारू रूप से चल रहे है| भारतीय आर्थिक विकास के लिए खाड़ी क्षेत्र में अब अधिक रूचि लेने लगे हैं जिसका एक कारण तेल युग की घटना भी है जिसने श्रमिकों को अपनी और अधिक ध्यान आकर्षिक किया है| इसका परिणाम आज खाड़ी देशों की अर्थव्यवस्था के कैश सेक्टर में भारतियों की उपस्थिति दर्ज है और यह खाड़ी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में सक्रिय रूप से योगदान देते हैं| अजहर कहते है कि खाड़ी क्षेत्र के भारतीय प्रवासिओं से भारतीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलता है| यह प्रवासी भारत को खाड़ी देशों के सम्बंधों को मजबूत करने में बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभ रहे है|

Philippe, (2017) ने अपने शोध अध्याय “Mass Migration and Uprisings in Arab Countries An Analytical

Framework” में लेखक सर्वप्रथम यह सवाल उठता ही कि- क्या अरब जगत में राजनीतिक आन्दोलनों और जनसंख्या आन्दोलनों के बीच कोई सम्बंध है? इसके आगे लेखक विद्रोह और उत्प्रवास के सामान्य निर्धारको की समीक्षा करते है हालाँकि दोनों घटनाओं को कई तरीके से जोड़ा जा सकता है जिनमें से एक अप्रत्यक्ष लिंक है जिसके द्वारा कुछ निर्धारको को विद्रोह बड़े पैमाने पर होते है| वास्तव में विद्रोह में बड़े पैमाने पर प्रवाह उत्पन्न होता है और जिनमे ज्यादातर मजदूर होते है आगे लेखक विद्रोह के परिणामों को बताते है कि आर्थिक प्रवास करना और तानाशाही को भी प्रवासी आंदोलनों ने समाप्त करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है| इसके आलावा शोषण, दुर्व्यवहार व हत्यायें भी काफी हद तक कम हुई है लेकिन यह आन्दोलन सीरिया में नागरिक संघर्ष में बदल गये जिसे दमन करने के लिए यहाँ से लोगों को जबरन हटाया गया, जिसमें 4 मिलियन से अधिक शरणार्थी थे| खाड़ी क्षेत्र के प्रवासियों की भरतीय राजनीतिक परिवर्तनों में ही भागीदारी रही है जिसमें विद्रोह में भारतीय प्रवासियों की प्रत्यक्ष क्रांति में भाग लिया| जिसके परिणाम से राजनीतिक विकास पर प्रभाव पड़ा है| इस शोध अध्याय का उद्देश्य मात्रभूमि की राजनीति पर प्रवासी भारतीयों के प्रभाव या मात्रभूमि में होने वाले विद्रोहों में, राजनीति प्रेषण के माध्यम से राष्ट्रीय प्रवासियों की भूमिका अध्ययन करना है|

Pethiyagoda, (2017) की पुस्तक “India-GCC Relations: Delhi’s Strategic Opportunity” में लेखक भारतीय प्रवासी श्रमिकों के द्वारा भारत व खाड़ी क्षेत्र के मध्य सम्बंधों के इतिहास की बात करते हैं| लेखक भारत की बढती राजनीतिक और आर्थिक रूचि ने खाड़ी ऊर्जा पर उसकी निर्भरता के रणनीतिक आयाम को बढा दिया है| लेखक यह भी बताया है कि भारत जीसीसी सम्बंधों को प्रभावित करने वाला कारक शक्तियों के बीच बढती बहुध्रुवीयता (जैसे अमेरिका, रूस और चीन की बढती क्षेत्रीयता) है लेकिन भारत को जीसीसी के साथ सम्बंधों को मजबूत करने के लिए नरम शक्ति है जो कि भारतीय जुड़ाव को जीसीसी के साथ बढावा देता है| वर्तमान सन्दर्भ में लेखक कहते हैं कि जीसीसी नीति-निर्माताओं को भारत के साथ अपने सम्बंधों को बढाने के अवसर देता है| अंत में लेखक ऊर्जा परिद्रश्य को भारतीय मानव संसाधनों और प्रवासी जुड़ाव के मध्य सम्बंधों को बढाया जा सकता है|

Anjum, (2017) “Indian Diaspora in GCC Countries” प्रस्तुत अध्ययन में लेखिका ने खाड़ी क्षेत्र में रह रहे भारतीय प्रवासी समुदाय की ओर ध्यान दिया गया है कि प्रवासी खाड़ी क्षेत्र की ओर 1970 के तेल संकट के बाद से बड़ी संख्या में प्रवास करने गये, इसी समय खाड़ी क्षेत्र में कुशल व अर्ध-कुशल श्रमिकों को रोजगार के व्यापक अवसर मिले है| लेखिका कहती हैं कि खाड़ी क्षेत्र में भारतीय आबादी भारतीय राज्यों- आंध्रप्रदेश,तमिलनाडु, केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, पंजाब, बिहार, उत्तरप्रदेश और राजस्थान से आते हैं| भारत सरकार ने लेखिका का मत है कि भारत सरकार ने 1991 की उदारीकरण नीति अपनायी जिसका एक प्रभाव यह भी देखा जा गया कि भारतीय श्रमिकों ने देश से बाहर जाकर अपना आर्थिक विकास करने में रूचि दिखाई| लेखिका ने अंत में अपने अध्ययन में बताया है कि भारतीय प्रवासियों का प्रवासन करने का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रभाव देखने को मिले है| सकारात्मक प्रभाव यह है कि दोनों देशों को आर्थिक लाभ हुआ है व नकारात्मक प्रभाव यह है कि ब्रेन ड्रेन व में फोर्स का अपने देश से बाहर चले जाना है|

Pande, (2018) के शोधपत्र “India and its Diaspora: Charting New Avenues of Engagement” में लेखिका कहती है कि भारतीय प्राचीन समय से ही प्रवास करते आ रहे हैं लेकिन 1990 के दशक से नीतिगत दृष्टिकोण में बदलाव कर रहे हैं| प्रवासी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मात्रभूमि के साथ सम्बंधों को बनाये रखते है इसके साथ ही साथ प्रवासी अपने देश के जुड़ाव को भी बढाने का कार्य करते हैं और प्रवासी क्षेत्र में भारतीय सॉफ्ट पॉवर के रूप में कार्य करते हैं| भारत को भारतीय प्रवासियों की इस छिपी हुई क्षमता को समझने में थोड़ी देर हुई, जिसके बाद भारत ने इस ओर ध्यान दिया और 1990 के दशक में प्रवासियों को जोड़ने के लिए कुछ कदम उठाये गये| प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य वर्षो से प्रवासी भारतियों के प्रति भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट करना और दोनों देशों के जुड़ाव के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना है| यह शोधपत्र भारत के विकास में अप्रवासी भारतियों की भागीदारी को बढाने के तरीकों की पहचान करने का प्रयास करता है| लेखिका भारत और राष्ट्र राज्यों के सैध्दांतिक विषय की भी चर्चा करती है|

Sharma & Mehta, (2020) “Foreign Policy of India under Modi Government” प्रस्तुत शोधपत्र भारतीय विदेशनीति के बारे में तर्क देता है कि भारत एक मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि को

बनाये हुये है लेकिन चीन से प्रतिस्पर्धा करने के लिए भारत को तात्कालिक रणनीति बनाने की आवश्यकता है| भारत के पास सॉफ्ट पॉवर सम्पति है जिसको हार्ड पॉवर और असीमित संसाधनों का प्रभावी तरीके से प्रयोग से प्रयोग करें तो सार्थक रूप से चीन को पीछे कर सकता है| प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मोदी सरकार के तहत भारत की विदेशनीति तक पहुँच को बनाना है और चीन, पाकिस्तान और संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बंध में मोदी सरकार की नीति तक पहुँचाना है| यह शोधपत्र द्वितीयक स्त्रोतों पर आधरित है| मोदी सरकार ने Act East Policy, Link West Policy, South Asia Policy, Fast Track Diplomacy इस तरह से कई नीतियों को बनाया ताकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को मजबूत किया जा सकें|

Thomas, (2020) ने अपने शोध अध्याय “Labour Migration between Indian and Gulf: Regemes Imagenaries and Continuities” में बताया है कि भारतीय प्रवासी जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासन करने वाले अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन से सम्बंधित है जिसमे लेखक ने कुछ तर्कों को इस अध्याय में वर्णित किया है| पहला तर्क है- खाड़ी क्षेत्र में प्रवासन, आन्दोलन व प्रवासी जुड़ाव के इतिहास को समझना| दूसरा तर्क खाड़ी क्षेत्र में प्रवासन व भारतीय प्रवासियों की गतिविधियों को समझना है| तीसरे तर्क में लेखक कहते है खाड़ी क्षेत्र में प्रवासी एक भावनात्मक और अनौपचारिक नेटवर्क बनाते है ये नेटवर्क प्रवासन को भी बढावा देते है व शोषण को कम करने में भी सहायक होते है| चौथा तर्क इस आधार पर लेखक ने दिया है कि प्रवासन प्रक्रियाओं में वास्तविक, काल्पनिक, घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय गंतव्य के बीच वैकल्पिक चक्रीय प्रक्रिया होती है| अंत में लेखक यह तर्क देता है कि भारतीय प्रवासी प्रवासन के दौरान एक एक भौगोलिक आन्दोलन और विश्वव्यापी जुड़ाव की स्थिति पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान निभाते है| लेखक में इस अध्याय में उन श्रमिकों के बारे में ध्यान देते जिनको कि काफला प्रणाली से होकर जाना पड़ता है जिससे श्रमिकों की अवधि प्रतिनिधित्व होती है इससे कार्यकर्ता के श्रम में बाधा आती है और नागरिकता का विषय चिंताजनक बन जाता है|

Ahmad & Rahman, (2022) के लेख “India’s Soft Power Diplomcy towards the GCC Countries” में लेखक

भारत और खाड़ी क्षेत्र के मजबूत सम्बंधों की बात करता है| भारतीय प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में आर्थिक विकास कर रहे हैं बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था को बढाने में अपना योगदान देते हैं| 2018 में 80 बिलियन से अधिक प्रेषक भारत को प्राप्त हुआ| भारतीय प्रवासियों से दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को बढाने का कार्य करते हैं, इसके साथ ही साथ यह प्रवासी दोनों देशों के सम्बंधों को भी मजबूत करते हैं| इस लेख में यह भी बताया है कि भारतीय डायस्पोरा विदेशनीति में एक रणनीति सम्पत्ति के रूप में उभरा है| इस लेख में का उद्देश्य भारत की विदेशनीति में सॉफ्ट पॉवर के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में भारतीय प्रवासियों की भूमिका पर ध्यान केन्द्रित करना है| डायस्पोरा सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सम्पत्ति मणि जाती है|

Ashwarya, (2023), “India’s National Role Couception and Relations with GCC Countries under Modi: A Focus on Saudi Arabia” प्रस्तुत शोधपत्र में लेखिका ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांतिपूर्ण भूमिका के बारे में बताया है जो कि नेहरु के समय से चली आ रही है और भारत की महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान कर रही है| प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य खाड़ी क्षेत्र में संयुक्त अरब अमीरात में भारत की नरम कूटनीति का अध्ययन करना है और वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा खाड़ी सहयोग परिषद् देशों के साथ शांतिपूर्ण सम्बंधों का अध्ययन करना है| लेखिका ने अब्राहम समझौते का उल्लेख किया है जिसके माध्यम से शांति व सुरक्षा की भारत की अवधारण को स्पष्ट करता है| इस लेख में भारत का आर्थिक लाभ सुनिश्चित करते हुये प्रमुख खाड़ी देशों में भारतीय जुड़ाव का भी उल्लेख किया है| प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णात्मक शोध पदृति का प्रयोग किया गया है व सम्पूर्ण शोध अध्ययन दृितीयक आकड़ों पर आधारित है|

शोध अन्तराल-

उपरोक्त शोध अध्ययनों के आधार पर यह कहना उचित होगा कि भारत एवं खाड़ी देशों पर अधिक शोध अध्ययन हुये है एवं भारतीय प्रवासियों के आर्थिक विषय पर भी अधिक ध्यान दिया गया है जिसमें की भारतीय प्रवासियों की द्विपक्षीय भूमिका(आर्थिक व राजनीतिक) को दर्शाया गया है परन्तु खाड़ी देशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों की स्थिति

एवं समस्याओं पर कोई भी अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है इसी को अपना मुख्य आधार बनाते हुये शोधकर्ता द्वारा अपने शोध का विषय **“खाड़ी क्षेत्र में भारतीय प्रवासी श्रमिकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का एक समीक्षात्मक अध्ययन (2014 से वर्तमान तक)”** लिया गया है जिस पर कि सम्पूर्ण शोध अध्ययन किया जायेगा|

परिकल्पना-

1. भारत एवं खाड़ी देश प्राचीन समय से ही एक दूसरे के सहयोगी देश रहे हैं|
2. वर्तमान भारतीय विदेशनीति खाड़ी देशों के प्रति नरम व आदर्शवादी है|
3. खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासी अनेक चुनौतियों का सामना करते आ रहे हैं जैसे काफला प्रणाली, वेतन में देरी, वीजा रोकना, शोषण, असमान व्यवहार इत्यादि|
4. भारत सरकार के द्वारा भारतीय प्रवासियों के लिए अनेक नीतियाँ एवं योजनायें बनाई गई हैं परन्तु वह वर्तमान में सक्रिय रूप से प्रभावी नहीं है|
5. वर्तमान समय में खाड़ी देशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों के लिए खाड़ी देशों द्वारा कुछ सुविधायें प्रदान की जा रहीं है जैसे वीजा बढाना, आवास की सुविधा, शिक्षा व अस्पताल की सुविधा इत्यादि|

सैद्धांतिक रुपरेखा-

भारतीय विदेशनीति का आधार उदारवादी एवं यथार्थवादी सिद्धांत है| भारत और खाड़ी देशों के मध्य सम्बंध सॉफ्ट पॉवर पर आधारित हैं जिसमें भारतीय प्रवासियों का बहुत बड़ा महत्त्व देखा जा सकता है| भारत और खाड़ी देशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की भूमिका को समझने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत संरचनावाद को भी भारत ने अपनी विदेशनीति में सम्मिलित किया है| भारतीय प्रवासियों के आधार पर खाड़ी देशों के प्रति भारत ने अपने विदेशनीति के यथार्थवादी और संरचनावादी सिद्धांत को अपनाया है|

भारतीय विदेशनीति का प्रथम आधार यथार्थवादी दृष्टिकोण है जिसके माध्यम से भारत अपना वर्चस्व सम्पूर्ण विश्व में दिखता है भारत एक सम्प्रभु व शक्तिशाली राष्ट्र है| यथार्थवादी सिद्धांत के कौटिल्य, ई. एच. कार, मोर्गेंथाऊ, मार्क्स,

केन्थ और वाल्ट्ज आदि प्रमुख विचारक हैं| यथार्थवादी विचारक ई. एच. कार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में कहते हैं कि " विश्व जिस रूप में है उसका अध्ययन वैसे ही किया जाना चाहिये" (कुमार, 2016)| यथार्थवादियों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सत्ता का संघर्ष होना और राष्ट्र राज्यों के शक्ति व महाशक्तियों के संघर्ष पर अधिक बल दिया जाता है| यथार्थवादी सिद्धांत के कई आयाम हैं- **परम्परागत यथार्थवाद, नवयथार्थवाद (संरचनात्मक) यथार्थवाद, सुरक्षात्मक यथार्थवाद व आक्रामक यथार्थवाद** है| परम्परागत यथार्थवादी विश्व में शक्ति के संघर्ष को ही वर्णित करते हैं जिसमें ई. एच. कार और मोगेन्थाऊ के विचार आते हैं| मोर्गेंथाऊ ने अपनी पुस्तक Politics Among The Nations (1948) में यथार्थवाद को बताया है| भारत ने खाड़ी देशों के प्रति यथार्थवाद के परम्परागत यथार्थवादी सिद्धांत को अपनाया है| ई. एच. कार के अनुसार "राज्यों द्वारा शक्ति के अनुसरण 'राष्ट्रीय हितों' को बढावा देने के रूप में किया जाता है| इसके साथ ही सुरक्षात्मक यथार्थवादी सिद्धांत को भी अपनाया गया है जिससे प्रवासी भारतीयों की खाड़ी देशों उनके हितों की रक्षा की जा सकें| प्रवासी भारतीय भारतीय विदेशनीति में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा खाड़ी देशों व भारत के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है(कुमार, 2016)| भारतीय विदेशनीति में भारतीय प्रवासियों के लिए एक अलग सिदान्त **संरचनावाद** को भी विदेशनीति का अंग बनाया गया है| भारत खाड़ी क्षेत्र के साथ अपने प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा करने के लिए संरचनावादी सिद्धांत को भी अपनाते है| संरचनावाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मानदंडो, मूल्यों और सामाजिक निर्माणों की भूमिका के निर्वाह को दर्शाता है| भारतीय विदेशनीति का दूसरा आधार **उदारवादी दृष्टिकोण** भी है जिससे भारत अपने मित्रराष्ट्रों के साथ सम्बंधों को बनाये रखने का कार्य करता है| उदारवादी सिध्दात के प्रमुख विचारक बेन्थम, कान्ट, चर्चिल और फुकुयामा हैं| उदारवाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में लोकतान्त्रिक राज्य का निर्माण, आर्थिक परस्पर निर्भरता और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग के विषय में बात करते है और राज्यों के मध्य शांति स्थापित करने पर बल देते हैं| नवउदारवादी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के भीतर अराजकता के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं| नवउदारवादियों का मत है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जटिल परस्पर निर्भरता

की धारणा हैं जिसमें देश सामाजिक और राजनीतिक सम्बंधो से जुड़े हैं| इसी कथन से स्पष्ट होता है कि भारत और खाड़ी देशों के मध्य सामाजिक और राजनीतिक सम्बंध है(खन्ना, 2014)| नवउदारवाद में शक्ति की अवधारणा है जिसे भारत एवं खाड़ी देशों ने सॉफ्टपॉवर के रूप में अपनाया हुआ है अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सॉफ्टपॉवर का बहुत अधिक महत्त्व है| सॉफ्टपॉवर के माध्यम से प्रतिस्पर्धा या संघर्ष के बिना दो देशों के मध्य सम्बंधो को सरल बनाने का कार्य करते है| भारत की अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधो को खाड़ी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण बनाये रखने में सॉफ्टपॉवर का बहुत अधिक महत्व है| **सॉफ्टपॉवर** शब्द का उपयोग सर्वप्रथम **जोसेफ नाइ** ने अपनी पुस्तक **"बाउंड टू लीड: द चेंजिंग नेचर ऑफ़ अमेरिकन पॉवर"** में किया| जोसेफ नाइ ने शक्ति के तीन आयामों की पहचान की- सैन्य बल द्वारा जबरदस्ती, आर्थिक प्रोत्साहन की पेशकश करके प्रभाव और अपनी संस्कृति और मूल्यों के आधार पर राष्ट्र की अपील द्वारा अन्य राज्यों को अपने में शामिल करने की क्षमता होती है| सॉफ्टपॉवर का उपयोग शांति स्थापना के लिए किया जाता है जिससे एक राष्ट्र के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बंध बने रहें| सॉफ्टपॉवर से एक राष्ट्र की संस्कृति को दूसरे राष्ट्र में शांतिपूर्ण रूप से अपनाया जाता है| सॉफ्टपॉवर को संस्कृति का प्रेक्षण भी माना जाता है| भारत का प्रवासी समुदाय खाड़ी देशों में भारतीय सॉफ्टपॉवर का प्रतिनिधित्व करता है इससे दोनों राष्ट्रों के मध्य सम्बंध मित्रराष्ट्रों की तरह हैं| भारतीय प्रवासियों के द्वारा भारतीय संस्कृति को खाड़ी क्षेत्र में भारतीय संस्कृति को दर्शाया जाता है इससे दोनों देशों के मध्य अच्छा समन्वय होता है| भारतीय प्रवासी खाड़ी देशों के प्रति भारतीय सम्बंधो को एक कड़ी से जोड़ने का कार्य करते हैं इससे भारत व खाड़ी देश एक दूसरे पर निर्भर भी हैं| सॉफ्टपॉवर कूटनीति का उद्देश्य भारत व खाड़ी देशों के मध्य प्रवासी समुदाय की सुरक्षा व हितों की पूर्ति करने में अहम योगदान देता है(Nye, 2005)|

शोध विधि-

प्रस्तुत शोध-प्रस्ताविका में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्वति को अपनाया जायेगा| इस शोध-प्रस्ताविका में तथ्यों का संकलन मुख्यतः प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों पर किया जायेगा| प्राथमिक स्त्रोतों के अंतर्गत सरकारी दस्तावेज

व प्रतिवेदन एवं विज्ञापन सहित विभिन्न आयोगों की बनी हुई नीतियों एवं रिपोर्टों का प्रयोग किया जायेगा| द्वितीय स्त्रोतों के अंतर्गत मुख्यतः पुस्तकें, लेख, समाचार पत्र, पत्रिकायें, संपादकीय लेख, इंटरनेट वेबसाइटों और अन्य प्रकाशित व अप्रकाशित दस्तावेज आदि का प्रयोग किया जायेगा|

अध्ययन का महत्त्व-

प्रस्तुत अध्ययन का महत्त्व भारतीय प्रवासियों के लिए एक ऐसी श्रमनीति बनाना जो भारतीय प्रवासियों के हितों की पूर्ति करें क्योंकि भारत आर्थिक क्रियाओं व ऊर्जा पेट्रोलियम के लिए खाड़ी देशों पर निर्भर है ठीक वैसे ही खाड़ी देश श्रमिक आधार पर भारतीयों पर निर्भर है| भारतीय श्रमिक खाड़ी देशों की अर्थव्यवस्था में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान देते हैं| दोनों ही आधारों पर यह कहना उचित होगा कि भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य सम्बंध द्विपक्षीय आधार पर स्थापित किये गये हैं| भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य सम्बंधो को कायम रखने में भारतीय प्रवासी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जो न केवल खाड़ी देशों के लिए सहायक है बल्कि भारत के लिए भी सहायक है क्योंकि यह दोनों देशों के मध्य आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढावा देते हैं| भारत सरकार ने अपने राष्ट्रीय हितों को बढानें के लिए डायस्पोरा को 'रणनीतिक सम्पत्ति' के रूप में रखा है| भारतीय प्रवासियों के खाड़ी क्षेत्र में पलायन करने से भारतीय प्रवासी अपने देश को आर्थिक प्रेषक के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका निभाते है इसलिए भारतीय प्रवासी भारत व खाड़ी देशों को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी कार्य करते है| इस शोध अध्ययन के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों के महत्त्व को समझने का प्रयास किया जायेगा| इसके साथ इस शोध अध्ययन में भारतीय प्रवासियों के समक्ष आ रही चुनौतियों को समझने का प्रयास किया जायेगा तथा भारत की नरम विदेशनीति में भारतीय प्रवासियों की भूमिका को समझाने का प्रयास किया जायेगा| इसके अलावा इस अध्ययन के माध्यम से भारत सरकार अपने भारतीय प्रवासियों के लिए कैसे कार्य कर रही है इस विषय पर भी प्रकाश डाला जायेगा| प्रस्तुत शोध समाज में नये साहित्य का निर्माण करेगा| यह शोध अध्ययन भविष्य में राजनीति विज्ञान के शोधार्थियों के लिए एक नये साहित्य का निर्माण करेगा और राजनीति

विज्ञान पढ़ रहे छात्र एवं छात्राओं के लिए नये शोध व पथप्रदर्शक का कार्य भी करेगा और साथ ही सरकार के नीति निर्मातायों को भविष्य के लिए अच्छी नीतियों के निर्माण के लिए मार्गदर्शन कार्य करेगा|

प्रस्तावित अध्याय-

प्रथम अध्याय- भारत एवं खाड़ी देशों के मध्य सम्बंधो की ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय- खाड़ी देशों के प्रति वर्तमान भारतीय विदेशनीति

तृतीय अध्याय- खाड़ी देशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चुनौतियाँ

चतुर्थ अध्याय- भारत सरकार द्वारा बनाई गई वर्तमान सरकारी नीतियों एवं योजनाओं का भारतीय प्रवासियों पर प्रभाव

पंचम अध्याय- वर्तमान में खाड़ी देशों द्वारा भारतीय प्रवासियों को प्रदान की जा रही नीति एवं योजनायें

षष्टम अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव

सन्दर्भ सूची-

Ahmad, I. & Khan, A. B. (2011). INDIAN MIGRANTS IN GULF STATES: Issues and Problems. The Indian Journal of Political Science. PP.1143-1164. https://www.jstor.org/stables/41856546

Ahmad, I. & Khan, A. B. (2011). INDIAN MIGRANTS IN GULF STATE: Issues and Problems. The Indian Journal of Political Science, Indian Political Science Association.

Azhar, M. (2016). Indian migrant workers in GCC countries. Diaspora Studies. DOI: 10.1080/09739572.2016.1183890.

Anjum, F. (2017). Indian Diaspora in GCC Countries. International Journal of Research Culture Society. ISSN: 2456-6683. PP. 82-88

Ahmad, W. & Rahman, A. (2022). India's soft power diplomacy towards the GCC countries. International Journal of Multidiciplinary Trends. PP. 209-213. ISSN: 2709-9369. www.multisubjectjournal.com

Ashwarya, S. (2023). India's National Role Conception and Relations with GCC Countries under Modi: A Focus on Saudi Arabia. Journal of Asian and African Studies. PP. 589-603. DOI:

10.1177/0021909623116204

Agarwal, R. (2022). India's Strategic Partnership with the UAE: A Key Pillar of India's Outreach in West Asia. Indian Foreign Affairs Journal. PP. 15-28. https://doi.org/10.32381/IFAJ.2022.17.1-2.2

Blarel, N. (2014). Modi looks West? Assessing change and continuity in India's Middle East policy since 2014. Springer Nature Publication Limited. https://doi.org/10.1057/s41311-021-00314-3

Cainkar, L. (2013). GLOBAL ARAB WORLD MIGRATIONS AND DIASPORAS. The Arab Studies Journal. PP. 126-165. https://www.jstor.org/stable/41968271

Chambers, T. (2020). Labour migration between India and the Gulf: regimes, imginaries and continuities. UCL Press. https://jstor.org/stable/j.ctv13xps20.15

Embassy of India, Riyadh, Saudi Arabia. (2023)

Gulf Cooperation Council. https://www.moec.gov.ae

कुमार, अ. (2016). अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों के सिद्धांत का एक परिचय. Pearson Publication. PP. 1-34. ISBN- 978-81-317-5947-9

खन्ना, वी. एन. (2014). अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध. विकास पब्लिशिंग हाउस. ISBN- 13: 978-9325968363.

Myron, W. (1982). International Migration and Development: Indians in the Persian Gulf. Population and Development Review. Population Council.

Mithell, C. (1989). International Migration, International Relations and Foreign Policy. International Migration Review. PP. 681-708. https://www.jstor.org/stable/2546435

Ministry of External Affairs. (2023).

Ministry of Overseas Indian Affairs. (2023).

Naidu, L. K. (1991). Indian Labour Migration to Gulf Countries. Economic and Political Weekly. PP. 349-350. https://www.jostor.org/stable/4397333

Nye, J. (2005). Soft Power: The Means to Success in World Politics. Public Affairs Publisher. ISBN- 978-1586483067

Pethiyagoda, K. (2017). India-GCC Relations: delhi's strategic opportunity. Brookings Doha Center

Analysis Paper. No. 18.

Pande, A. (2017). India and its Diaspora: Charting New Avenues of Engagement. Sage Publications. PP. 180-195. DOI: 10.1177/0020881718777592. https://www.researchgate.net/publication/327317089_India_and_its_Diaspora_Charting_New_Avenues_of_Engagement?publicationCoverPdf

Pradhan, K. P. (2014). India's Relationship with the Gulf Cooperation Council: Need to Look Beyound Business. IDSA Monograph Series. No-37. ISBN: 978-93-82169-38-3.

Seethe, K. M. (2013). India and Emerging Gulf: Between 'Strategic Balancing' and 'Soft Power' Options. (Ed), Malik, M. & Niblock, T. Asia- Gulf Economic Relations in the 21st Century: The Local to Global Transformation. Gerlach Press. ISBN: 978-3-940924-10-0. PP. 147-170.

Secretarit General of the Gulf Cooperation Council. https://www.gcc-sg.org

Thomas, K. T. (2003). INDIAN MIGRATION TO WEST ASIA: TRENDS AND CONEQUENCES. Proceeding of the Indian History Congress. PP. 1335-1343. https://www.jstor.org/stable/44145562

Thiollet, H. (2011). Migration as Diplomacy: Labour Migrants, Refugees, and Arab Regional Politics in the Oil-Rich Countries. International Labour and Working-Class History. Cambridge University Press. PP. 103-121. https://www.jstor.org/stable/41306911

Weiner, M. (1982). International Migratiion and development: Indians in the Persian Gulf. Population Council. PP. 1-36. https://doi.org/10.2307/1972688 https://www.jstor.or/stable/1972688

World Bank. wbgcc@worldbank.org

https://www.britannia.com (excess on December 2023).

https://www.jagranjosh.com (excess on December 2023).

https://www.mea.gov.in/population-of-overseas-indians.htm (excess on December 2023)

https://www.mea.gov.in/lok-sabha.htm?dtl/3597 (excess on December 2023)